ई-संस्करण, अंक 19

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children.®

# गपशप

हेलो दोस्तों,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। आपको इ गपशप कैसी लगी? मजा आ रहा है ना! हमे आशा है आप इनका आनंद अपने परिवार के साथ मिलकर ले रहे है। इन्हें पढ़ कर अपने विचार, प्रतिक्रिया और भावनाए हमसे जरुर साँझा करे। और हा इनको अपने दोस्तों और परिवार से साँझा करना ना भूले, जिससे आपके साथ साथ वह भी इन्हें पढ़ सके।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

आपकी चुलबुली और बुलबुली

## मैडम मैरी क्युरी

महान वैज्ञानिक मैडम मैरी क्युरी

भारत में एवं विश्व के अनेक देशों में अनगिनत महिलाओं ने अपनी उपलब्धियों से अपने देश का नाम रौशन किया है। कुछ महिलाएं अपने कार्य तथा अपनी सोच के कारण हर किसी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। लिंग और सीमाओं से परे हर किसी के लिए मैरी क्युरी प्रेरणा स्रोत हैं।

मैडम क्युरी एक रूसी महिला थीं। उनका जन्म वॉरसॉ (पोलैंड) में 7 नवंबर 1867 को हुआ था। माँ अध्यापिका तथा पिता प्रोफेसर थे। माता–पिता की शिक्षाओं का असर मैरी क्युरी पर भी पड़ा। वे बचपन से ही पढाई लिखाई में तेज़ थीं। माता–पिता के प्रोत्साहन तथा पढाई में रुची के कारण वे सभी प्रारंभिक कक्षाओं में आगे रहीं।

मैरी क्युरी फ्रांस में डॉक्टरेट पूरा करने वाली पहली महिला हैं। उनको पेरिस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने वाली पहली महिला होने का भी गौरव प्राप्त हुआ। यहीं उनकी मुलाकात पियरे क्यूरी से हुई जो उनके पति बने। इस वैज्ञानिक दंपत्ति ने 1898 में पोलोनियम और रेडियम की खोज की जो की चिकित्सा विज्ञान और रोगों के उपचार में एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी खोज साबित हुई। 1903 में मैरी क्यूरी को रेडियोएक्टिविटी की खोज के लिए भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला।

1911 में उन्हें रसायन विज्ञान के क्षेत्र में रेडियम के शुद्धीकरण (आइसोलेशन ऑफ प्योर रेडियम) के लिए रसायनशास्त्र का नोबेल पुरस्कार भी मिला। विज्ञान की दो शाखाओं में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली मैरी क्युरी पहली महिला वैज्ञानिक हैं।

## चमत्कारी इंजेक्शन का आविष्कार

अच्छा दोस्तों! यह बताओ की इंजेक्शन यानि सुई या टीके से किस–किस को डर लगता है? सच पूछो तो सब को थोड़ी बहुत घबराहट होती ही है। है ना यह कमाल का अविष्कार। आपको पता है, इंजेक्शन के अविष्कार के पीछे भी एक कहानी है।

बात सन् 1656 की है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के गणित के प्रोफेसर डॉ. रेन ने अपने एक दोस्त राबर्ट बायल के सामने यह दावा किया कि वे किसी भी प्रणी के स्क्त में दवाई डाल सकते है। राबर्ट बायल ने डॉ. रेन के सामने एक बड़ा'सा कुत्ता लाकर खड़ा कर दिया और अपने दावे का प्रदर्शन करने को कहा। डॉ. रेन ने भी अपने दावे को पूरा करने के लिए धतूरे का ज़हर उस कुत्ते के शरीर में एक नुकीले यंत्र में लगाकर डाल दिया। और उस ज़हर का असर उस कुत्ते पर कुछ समय बाद दिखाई पड़ने लगा।

1844 में जब मानव की त्वचा की सतह के कुछ नीचे इंजेक्शन लगाने की शुरुआत हुई तब डॉक्टरों का ध्यान इंजेक्शन की सुई एवं उसकी बनावट पर भी गया। इसके पहले सुई बहुत मोटी होती थी। वह इतनी पैनी भी नहीं होती थी।

सबसे पहले सुधरी हुई सुई एयर इंजेक्शन का इस्तेमाल, 3 जून 1844 को आयरलैंड देश की राजधानी डबलिन के मेअथ अस्पताल में डॉ. फ्रांसिस रिंड ने किया। डॉ. रिंड ने अपने इस इंजेक्शन के बारे में 17 वर्षों तक न किसी को बताया, न इसके निर्माण की विधि के बारे में किसी को जानकारी दी। सन् 1861 में उन्होंने अपने इस इंजेक्शन के बारे में लेख लिखा जिससे विश्व को इस आविष्कार की जानकारी हुई।

चिकित्सा के दौरान किसी भी मरीज को इंजेक्शन देना आज आम बात है। आजकल इंजेक्शन और सुइयां एक बार इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाती है। इसलिए इन्हें 'डिस्पोजेबल' (इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाने वाली) भी कहा जाता है। इनमें भी सुइयां अलग–अलग नम्बर की, कुछ बारीक तो कुछ मोटी होती है जो वयस्क एवं शिशु रोगी के लिए अलग–अलग काम आती है।

## मेरा संदेश

इस गतिविधि में आपको यह कल्पना करनी है कि आप एक राजनीतिक नेता या एक मंत्री हैं। अब आप किन विषयों या मुद्दों पर और कैसे काम करना चाहती हैं। लिखकर बताइये–